CORPORATE OFFICE
Delhi Office
706 Ground Floor Dr. Mukherjee Nagar Near Batra Cinema Delhi – 110009
Noida Office
Basement C-32 Noida Sector-2 Uttar Pradesh 201301

CURRENT AFFAIRS

Yojna IAS
yojnaias.com
योजना है तो सफलता है

website : www.yojnaias.com
Contact No. : +91 8595390705

Date: 17 अप्रैल 2023

प्राचीन भारतीय चिकित्सा

संदर्भ – हाल ही में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने प्राचीन भारत में ज्ञान की एक शाखा जिसे आज विज्ञान कहा जाता है के विभिन्न विषयों के बारे में अनुसंधान करने के लिए विश्वविद्यालयों को प्रोत्साहित करने की सलाह दी। आयोग ने आधुनिक चिकित्सा के छात्रों को भी कम से कम आयुर्वेद व सिद्ध सहित चिकित्सा की भारतीय प्रणाली पर क्रेडिट पाठ्यक्रम लेने के लिए प्रेरित किया।

प्राचीन भारत में विज्ञान – प्राचीनकाल में भारत को विश्वगुरु माना जाता था यह केवल शब्दों में नहीं वरन तथ्यों से साबित हो चुका है। भारत के प्राचीन स्रोतों से प्राप्त जानकारी आधुनिक काल को दिशा देने वाली प्रतीत होती है। जिसमें विभिन्न आविष्कारों के साथ विज्ञान के अनुप्रयोग प्राप्त होते हैं। प्रस्तुत लेख भारत के चिकित्सा शास्त्र पर आधारित है।

चिकित्सा विज्ञान-

हाल ही में आई कोविड महामारी के दौरान वैश्विक स्तर पर महामारी के हल के लिए चिकित्सकों व विशेषज्ञों द्वारा शोध किए जा रहे थे और एक सटीक उपचार के लिए चर्चाएं की जा रही थी।**विश्व की प्रथम चिकित्सा संगोष्ठी** का आयोजन सर्वप्रथम(700ई.पू.) भारत में ही **ऋषि भारद्वाज** द्वारा किया गया। जिसका उल्लेख **चरक संहिता**(आयुर्वेद की शाखा) में किया गया है।

ऋषि भारद्वाज को आयुर्वेद नामक चिकित्सा शाखा का प्रतिपादक भी कहा जाता है। आयुर्वेद में चिकित्सा के लिए मानव रोगों और उसके **उपचारों के अनुभव** के आधार भविष्य में चिकित्सा की जाती थी जिसे वर्तमान में **Medical Practice** कहा जाता है।

वैदिक काल में चिकित्सा शास्त्र को उसकी विशिष्ट क्षेत्रों की विशेषज्ञता के आधार बांटा गया है आज भी विशेषज्ञों को इसी आधार पर बांटा जाता है-

- शल्य वैद्य(सर्जन)
- भिषक(फिजीशियन)
- भिषगथर्वन(पुजारी चिकित्सक)

महाभारत काल में चिकित्साशास्त्र के वेदिककालीन विभाजन के साथ कुछ अलग शाखा का निर्माण हुआ. जैसे-

- रोगहर (फिजीशियन)
- शल्यहर (सर्जन)
- विषहर (जहर का इलाज करने वाले)
- कृत्यहर(भूतवैद्य)
- भिषगथर्वन(पुजारी चिकित्सक) आदि।

इन सभी शाखाओं में सुश्रुत की शल्य चिकित्सा को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

शल्य चिकित्सा – प्राचीन शल्य चिकित्सा का ज्ञान **सुश्रुत के सुक्षुत संहिता** के द्वारा प्राप्त होता है। संहिता में सुश्रुत के प्रयोगों और उसके द्वारा अपनाए गए शल्य उपकरणों का उल्लेख किया गया है।
शल्य चिकित्सा में प्रयुक्त उपकरण थे-

- प्रयोग के लिए पशु या मानव का मृत शरीर
- शल्य चिकित्सा में प्रयुक्त औजारों के नाम पशु पक्षियों के मुंह अथवा चोंच की आकृति के होते थे। और उन्हीं के नाम के उपकरणों का वर्णन संहिता में किया गया है।

शल्य क्रियाविधि

शल्य क्रियविधि करने से पूर्व रोगी को हल्का भोजन करने की सलाह दी गई है। चिकित्सा कक्ष में चिकित्सा से पूर्व सफेद सरसों, राल, नीम की पत्तियां व साल वृक्ष के गोंद का धुंआ देना चाहिए। वर्तमान में इस क्रिया के लिए एंटीसेप्टिक दिया जाता है। सभी प्रकार की शल्य विधि **मानक संचालन क्रिया** अथवा **SOP** के अनुसार की जाती थी-

- आहार्य(ठोस देह को निकालना),
- भेद्य(भेदना)
- छेद्य (छेदना)
- विस्त्राव्य (द्रव निकालना)

सुश्रुत संहिता में वर्णित कुछ शल्य चिकित्सा

- कान की सर्जरी
- मोतियाबिंद
- हार्निया
- पथरी
- आंख का ऑपरेशन आदि

सिद्ध चिकित्सा

सिद्ध चिकित्सा को विश्व की सबसे प्राचीन चिकित्सा माना जाता है। भारत में इस पद्धति का स्रोत शिव को माना जाता है, कहा जाता है कि शिव ही सबसे प्राचीन सिद्ध हैं।

- इस पद्धति को सर्वप्रथम भारत के तमिलनाडु राज्य में 18 सिद्धों ने विकसित किया था। उत्तर भारत में इस पद्धति को 9 नाथों व 84 सिद्धों द्वारा विकसित माना जाता है।
- यह आयुर्विज्ञान की एक शाखा है जिसमें रसायनों का निर्माण व प्रयोग औषधि के लिए किया जाता है। सिद्ध प्रणाली आकस्मिक रोगों के इलाज को छोड़कर सभी प्रकार के रोगों में सहायक होती है।
- तमिल संगम साहित्य के ग्रंथ थिरुक्कुरल में इस प्रकार की चिकित्सा का उल्लेख किया है।

सिद्ध चिकित्सा के निदान की प्रक्रिया-

- सर्वप्रथम रोग के प्रकार जैसे – तीन देहद्रव का बिगड़ना(वात,पित्त,कफ), सूक्ष्म प्रभाव, जहरीले प्रभाव, मनोवैज्ञानिक, आध्यात्मिक या वंशानुगत आदि की पहचान की जाती है।
- रोग का पाँच इन्द्रियों के माध्यम से निरीक्षण किया जाता है, इस प्रक्रिया को पोरियालारिथल व पुलानालाऱिथल कहा जाता है।
- निदान के लिए 8 गुना पद्धति का प्रयोग किया जाता है- ना, नीरम,मोझी, विझी, मझम, मथीराम, नाडी, स्परिसम।
- समस्त प्रक्रिया में मूत्र परीक्षण व पल्स रीडिंग महत्वपूर्ण होता है।

होम्योपैथी-

केंद्रीय होम्योपैथी अनुसंधान केंद्र के अनुसार भारत में होम्योपैथी की शुरुआत लगभग 200 वर्ष पूर्व की गई थी।

- होम्योपैथी की खोज जर्मन चिकित्सक सैमुएल हैनीमैन द्वारा की गई थी।
- यह पद्धति समः, समम्, समयति सिद्धांत पर आधारित है। जो समरूपता के सिद्धांत को निरुपित करता है।
- इस उपचार के प्रयोग में रोगी के लक्षणों के समान लक्षण स्वस्थ व्यक्ति में उत्पन्न किए जाते हैं। जिसके बाद समरुपता व सापेक्षता के आधार पर रोग का उपचार किया जाता है।
- होम्योपैथी दवाओं को पौंधों, पशुओं व खनिजों से निर्मित किया जाता है, जिनका कोई दुष्प्रभाव नहीं होता है।
- भारत का पहला होम्योपैथी कॉलेज, कलकत्ता में स्थापित किया गया था।
- भारत में आयुर्वेद, होम्योपैथी, सिद्ध आदि पद्धति में अनुसंधान व विकास के लिए आयुष संस्था कार्य कर रही है।

चिकित्सा क्षेत्र की वर्तमान चुनौतियाँ

- निरंतर दूषित हो रहे पर्यावरण के कारण श्वास संबंधी समस्याएं पनप सकती हैं।
- भविष्य में भारत में वृद्धों की संख्या में बढ़ोतरी होने की संभावना के साथ रोगों में बढ़ोतरी चिकित्सा व्यवस्था पर बोझ बढ़ाएगा।

- कोविड-19 जैसे नए रोगों का आविर्भाव और उससे उपजी आपतकालीन स्थिति चिकित्सा क्षेत्र के लिए नई चुनौती उत्पन्न कर रही है।

चिकित्सा क्षेत्र के लिए आगे की राह-

- वर्तमान में प्रयुक्त चिकित्सा पद्धति भारतीय इतिहास में मौजूद थी। वर्तमान में प्राचीन चिकित्सा का अध्ययन असाध्य रोगों के उपचार के लिए कुछ समाधानों के संकेत दे सकती है।
- आदिवासी व जनजाति समुदायों में प्रचलित चिकित्सीय पद्धतियों का अध्ययन को भी सामुदायिक शिक्षा में शामिल किया जा सकता है। इन चिकित्सा पद्धतियों के उपयोगी पहलुओं को वर्तमान चिकित्सा पद्धतियों में किया जा सकता है।
- बर्लिन के डाक्टर हिर्शबर्ग का कहना है कि *'यूरोप की समग्र प्लास्टिक सर्जरी ने भारत के ये चातुरीपूर्ण तरीके जानने के बाद एक नई उड़ान भरी।'* अतः प्राचीन भारतीय चिकित्सा भारत सहित समस्त विश्व की एक विरासत है जिसका विकास व ज्ञान, चिकित्सा में आ रही नई वर्तमान चुनौतियों में सहयोगी हो सकता है।

स्रोत

Indian Express

पुस्तक- प्राचीन भारत के वैज्ञानिक कर्णधार

www.ccrhindia.nic.in

Therapies_And_Regimen

Gunjan Joshi

हीट वेव

संदर्भ- 16 अप्रैल को मुंबई में हीट वेव के कारण 11 लोगों की एक साथ मौत हो गई। जो हीच वेव के कारण एक ही समय में होने वाली एक बड़ी घटना है। हीट वेव या गर्मी की लहर से प्रभावित सभी लोग मुंबई में एक सरकारी सभा में भाग ले रहे थे।

- भारत मौसम विज्ञान के अनुसार घटना दिवस के दिन मुंबई का तापमान 34.1 डिग्री सेल्सियस था। जो सामान्य से 1 डिग्री सेण्टिग्रेट था।
- इण्डियन एक्सप्रैस के अनुसार यह वेट बल्व तापमान युक्त हीट वेव की स्थिति हो सकती है।
- 17 अप्रैल को भारत मौसम विज्ञान ने पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, बिहार, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, उड़ीसा व आंध्र प्रदेश में हीट वेव की संभावना दर्ज की है।

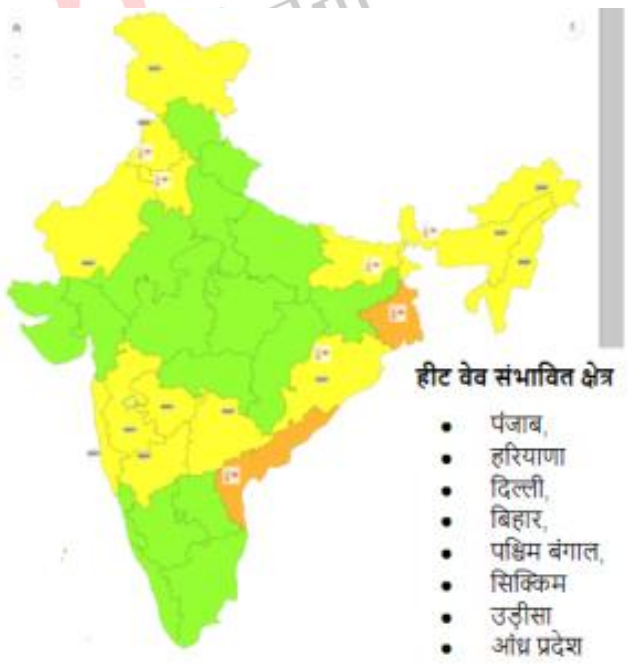

हीट वेव-

- हीट वेव, अत्यधिक तापमान की मौसमी जलवायु है।
- हीट वेव को किसी विशेष क्षेत्र की सामान्य जलवायु व तापमान के सापेक्ष मापा जाता है।
- ठण्डी जलवायु से संबंधित व्यक्तियों के लिए गर्म जलवायु का सामान्य तापमान भी हीट वेव की तरह कार्य कर सकता है।

हीट वेव घोषित करने के मानदण्ड

हीट वेव घोषित करने के लिए स्थानीय तापमान पर्वतीय क्षेत्रों में कम से कम 30 डिग्री सेण्टिग्रेट और मैंदानी क्षेत्रों में कम से कम 40 डिग्री सेण्टिग्रेट होना चाहिए। हीट वेव निर्धारित करने की दो परिस्थितियाँ हो सकती हैं-

- सामान्य तापमान में 4.5 -6.5 डिग्री सेण्टिग्रेट की बढ़ोतरी को हीट वेव और
- सामान्य तापमान के 6.5- 7 डिग्री सेण्टिग्रेट की बढ़ोतरी को अत्यधिक गंभीर हीट वेव की श्रेणी में रखा जाता है।
- **तटीय क्षेत्रों में हीट वेव घोषित करने मानदण्ड-** जब सामान्य तापमान कम से कम 4.5 डिग्री सेण्टिग्रेट की वृद्धि के साथ तापमान लगभग 37 डिग्री सेण्टिग्रेट तक पहुँच जाता है तो तटीय क्षेत्रों में हीट वेव घोषित किया जा सकता है।
- यदि उपरोक्त स्थिति दो स्टेशनों में लगातार दो दिनों के लिए बनी रहती है, तो हीट वेव घोषित किया जाता है।

भारत में हीट वेव संभावित क्षेत्र

- भारत में हीट वेव, मार्च से जून तक की अवधि में होता है। और कभी यह परिस्थिति जुलाई माह में भी पाई जाती हैं। भारत में मई माह में सर्वाधिक तापमान व हीट वेव की घटनाएं हो सकती है।
- हीट वेव का तापमान यदि समय के साथ बढ़ता जाता है तो हीट वेव भयानक हो सकता है।

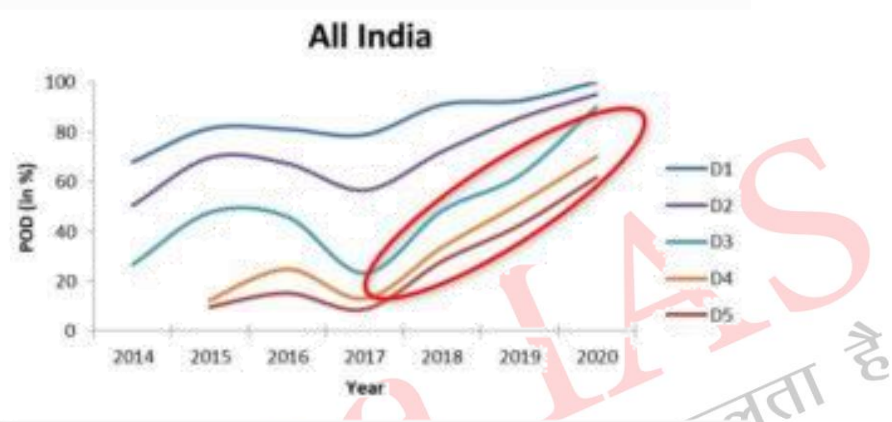

- भारत के उत्तर पश्चिमी राज्यों, मध्य राज्यों, पूर्व व प्रायद्वीपीय राज्यों के मैंदानी इलाकों में हीट वेव की घटनाएं, घटित होती हैं।
- इसमें पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना आदि राज्य प्रभावित होते हैं। कभी कभी तमिलनाडु व केरल के राज्यों में भी हीट वेव की घटनाएं पाई जाती हैं।
- देश में हीट वेव की घटनाओं का पूर्वानुमान भारतीय मौसम विज्ञान विभाग द्वारा किया जाता है।

भारत में हीट वेव की परिस्थितियाँ

- **परिवहन-** गर्म हवा के परिवहन के लिए उसक्षेत्र में गर्म हवा के लिए एक पैटर्न उपलब्ध होना चाहिए।
- **ऊपरी वायुमंडल में नमी की अनुपस्थिति-** ऊपरी वायुमण्डल में नमी की अनुपस्थिति तापमान की बढ़ोतरी का कारक होती है।
- **बादलविहीन आकाश-** वायुमण्डल में व्यावहारिक रूप से बादलों की अनुपस्थिति क्षेत्र में अधिकतम इंसुलेशन में सहायक होता है।
- **एंटीसाइक्लोनिक प्रवाह-** क्षेत्र की वायुमण्डलीय सतह पर एंटीसाइक्लोनिक प्रवाह भी हीट वेव का कारक हो सकता है।
- **वेट बल्ब तापमान** रुद्धोष्म संतृप्ति का तापमान है। यह हवा के प्रवाह के संपर्क में आने वाले नम थर्मामीटर बल्ब द्वारा इंगित तापमान है। गीले मलमल में लिपटे बल्ब के साथ थर्मामीटर का उपयोग करके गीले बल्ब का तापमान मापा जा सकता है। थर्मामीटर से पानी का रूद्धोष्म वाष्पीकरण और शीतलन प्रभाव हवा में "शुष्क बल्ब तापमान" से कम "गीले बल्ब तापमान" द्वारा इंगित किया जाता है। इसके कारण हीट वेव अधिक घातक हो जाता है।

भारत में हीट वेव के प्रभाव

- **मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव-** हीट वेव का सीधा प्रभाव मानव स्वास्थ्य पर पड़ता है इसके कारण थकान, कमजोरी, सिरदर्द, उल्टी, मांसपेशियों में दर्द जैसी समस्या हो सकती है। हीट स्ट्रोक की स्थिति में प्रलाप, दौरे या कोमा के साथ शरीर का तापमान 40*C यानी 104*F या इससे अधिक हो जाता है, जो कई बार मृत्यु का कारण बनती है।
- **हीटवेव का मानव श्रम पर प्रभाव-** हीट वेव के कारण मानव की श्रम करने की क्षमता कम हो जाती है, जिससे उसके श्रम क्षेत्र की उत्पादकता पर प्रभाव पड़ता है। यह आर्थिक रूप से निर्बल लोगों की स्थिति को भयावह कर सकता है।
- **कृषि पर प्रभाव-** भारत में हीट वेव का समय मार्च से जून तक होता है जिस समय रबी की फसल काटी जाती है हीटवेव के प्रभाव से रबी की फसलों पर प्रभाव पड़ता है। 2022 में पंजाब, हरियाणा व उत्तर प्रदेश में हीट वेव के कारण गेहूँ की फसलों की

उत्पादकता पर 2.75 मिलियन टन की कमी आई। गेहूं उत्पादन में कमी के कारण देश की निर्यात करने की क्षमता भी प्रभावित हो सकती है।

हीट वेव से निपटने के लिए कार्य

- भारतीय मौसम विज्ञान द्वारा दी गई पूर्व जानकारी को मीडिया के द्वारा अधिक से अधिक प्रसारित किया जा सकता है, जिससे मानव स्वास्थ्य कम से कम प्रभावित हो।
- हीट वेव से बचने के लिए हीट वेव प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को गर्मी से बचने के उपायों का पालन करना चाहिए, जिससे वे हीट वेव से अपनी सुरक्षा कर सकें।
- हीट वेव से अप्रभावी फसलों का प्रयोग किया जा सकता है।
- 2023 में अल नीनो की भी संभावना जताई जा रही है, अतः सरकार पहले से इन परिस्थितियों से निपटने के उपाय कर सकती है।

स्रोत

Indian Express
https://mausam.imd.gov.in/imd_latest/contents/subdivisionwise-warning.php

Gunjan Joshi

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com